Department of Political Science
D.B. College Jaynagar

B.A PART-III - Pub. Ad.

By - A.K. Yadav
(Asstt. Prof. Gptt.)

Date - 18/09/20

Lecture No. 17

लोक प्रशासन तथा निजी प्रशासन में असमानताएँ

लोक प्रशासन तथा निजी प्रशासन के बीच निम्नलिखित रूप में अन्तर को स्पष्ट किया जा सकता है -

(1) लोक प्रशासन का प्राथमिक उद्देश्य जन कल्याणकारी कार्यों को सम्पन्न करना होता है, भले ही उसका द्वितीय उद्देश्य उन जन कल्याणकारी कार्यों के संपादन हेतु आंशिक शुल्क भी प्राप्त करना होता है जबकि निजी प्रशासन का प्राथमिक उद्देश्य लाभ कमाना होता है भले ही उनके बदले उसके द्वारा सेवा भी प्रदान की जाती है।

(2) लोक प्रशासन का कार्यक्षेत्र एवं प्रभाव निजी प्रशासन की तुलना में व्यापक है।

(3) प्रतिनिधित्व के संदर्भ में भी लोक प्रशासन तथा निजी प्रशासन के बीच अन्तर है। लोक प्रशासन के द्वारा राज्य की इच्छा का प्रतिनिधित्व किया जाता है। जबकि निजी प्रशासन में ऐसी विशेषताएँ दृष्टिगोचर नहीं होती हैं।

(4) कानून के अनुपालन व औपचारिकता के निर्वहन को लेकर भी दोनों में अन्तर किया जा सकता है। लोक प्रशासन में कानून का अनुपालन तथा औपचारिकता का निर्वहन कठोरता के साथ किया जाता है जबकि निजी प्रशासन में इस सन्दर्भ में लोचता देखी जा सकती है।

(5) लोक प्रशासन को कुछ कार्यक्षेत्रों जैसे - आर्थिक व सामरिक क्षेत्र एकाधिकार प्राप्त होता है, जहाँ निजी प्रशासन का प्रवेश वर्जित है। स्पष्टतः दोनों के आधिकारिक स्वरूप में अन्तर की रेखा खींची जा सकती है।

(6) उत्तरदायित्व निर्वहन के सन्दर्भ में भी दोनों प्रशासनों में अन्तर है। लोकप्रशासन जनता के प्रति उत्तरदायी होता है जबकि निजी प्रशासन मात्र अपने ग्राहकों के प्रति उत्तरदाई होती है।

7

PTO

Scanned with CamScanner

(7) कानूनी हस्तक्षेप निजी प्रशासन की तुलना में लोक प्रशासन में अधिक होता है।

(8) कार्यकुशलता के सन्दर्भ में भी लोक प्रशासन तथा निजी प्रशासन में अन्तर है। लोकप्रशासन में सक्रियता के साथ कार्यों का सम्पादन कम होता है जबकि निजी प्रशासन में इसके विपरीत स्थिति कायम होती है। निजी प्रशासन में कार्मिक रुचि और परिश्रम के साथ कार्यों को सम्पादित एवं क्रियान्वित करते हैं।

(9) लोकप्रशासन का स्वरूप राजनीतिक होता है जबकि निजी प्रशासन का स्वरूप गैर राजनीतिक होता है।

(10) लोकप्रशासन में कार्मिक स्थायित्व को लेकर आश्वस्त होते हैं जबकि निजी प्रशासन में कार्मिक स्थायित्व के सन्दर्भ में भयभीत रहते हैं।

(11) सामान्यतः लोकप्रशासन में परिवर्तन की गति धीमी होती है जबकि निजी प्रशासन में परिवर्तन की गति प्रायः तेज होती है।

लोकप्रशासन और निजी प्रशासन में अन्तर है परन्तु दोनों को बिल्कुल अलग नहीं किया जा सकता है। वास्तविकता तो यह है कि दोनों में मात्रा का अन्तर अधिक है। गुण का अन्तर बहुत ही कम। वैश्वीकरण के प्रभाव में तो लोकप्रशासन तथा निजी प्रशासन एक-दूसरे के समीप आ रहे हैं। तभी तो डॉ० पॉल एपलबी ने कहा है कि "लोकप्रशासन और निजी प्रशासन की दूरियाँ मिट रही हैं।"

End

Scanned with CamScanner